*Vageeshwari* *Dec. 2020, Vol. 34*
*ISSN 0975-7872*

# ग्वालियर घराने की ख्याल शैली का तकनीकी पक्ष

**डॉ. सुरेन्द्र नाथ सोरेन**
सहायक प्रध्यापक
संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

## सार

भारतीय संगीत में गायन, वादन और नृत्य इन तीनों विधाओं की परम्पराएँ अलग–अलग समय पर विविध रूपों में प्रस्तुति होती है और कालान्तर परम्परा ही पुरातन संगीत को वर्तमान संगीत से जोड़ती है, अलग करती है तथा विभाजक रेखा की भूमिका भी निभाती है। अतः परम्परा को हिन्दुस्तानी संगीत का अभिन्न अंग कह सकते हैं। घराने परम्परा के संकेत अथवा प्रतीक है और परम्परागत संगीत के प्रतिनिधि भी है।

गायन के लक्षण बताते हुए पं॰ शारंगदेव ने संगीत रत्नाकर में इसी अर्थ में ''सुसम्प्रदाय'' शब्द का व्यवहार किया है जिसका अर्थ होता है उत्तम गुरू परम्परा से शिक्षा लिया हुआ। सम्प्रदाय शब्द का अर्थ किसी वस्तु को विधिवत् व विशेषता पूर्वक देने की प्रक्रिया। आगे चलकर यही सम्प्रदाय शब्द रूढ़ार्थ में गुरू द्वारा शिष्य को विधिवत ज्ञान दिए जाने की परम्परा का घोतक हो गया। सम्प्रदाय, वर्ग, शैली, समुदाय, शाखा, वाणी आदि घरानों की प्राचीनता के ही घोतक है। घराना परम्परा भारतीय संगीत में अपना एक अद्वितीय स्थान रखता है। गायन शैली की मौलिकता एवं विशिष्टता के आधार पर ही घराने अस्तित्व में आए। घरानेदार संगीत हमारे संगीत की नींव है।

हमारी प्राचीन संस्कृति को सुरक्षित रखने का श्रेय घरानों को ही जाता है। संगीत गुरूमुखी कला है। संगीत में घराना अपना एक विशेष स्थान रखता है। ख्याल गायन शैली के घरानों में से ग्वालियर घराना, आगरा घराना, किराना घराना, पटियाला घराना, दिल्ली घराना, प्रमुख हैं।

संगीत के क्षेत्र में ग्वालियर और वहाँ के राजदरबार का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ग्वालियर घराने की गायकी प्रणाली अंष्टांग है, अष्टांग का अर्थ है आठ अंग अर्थात् आठ अंग से युक्त गायकी अष्टांग गायकी कहलाती है। अष्टांग गायकी की बढ़त अत्यन्त कलात्मक, रसपूर्ण और हृदयस्पर्शी है। बहलावा, मींड और गमक तथा उसके प्रकार इस गायकी के प्राणतत्व हैं। ग्वालियर घराने में आठ अंगों का समावेश इस प्रकर है–

1. आलाप – बहलावा 2. बोलालाप 3. तान 4. बोलतान 5. गमक
6. लयकारी 7. मींड और सूत 8. खटका, मुर्की, ज़मज़मा

अष्टांग गायकी ग्वालियर घराने की क्लिष्ट गायकी मानी जाती है। इसलिए जो भी कलाकार इस घराने से संबंध रखता है उसे इन आठ अंगों का पूर्ण अभ्यास करना चाहिए तथा राग का विस्तार

इन आठ अंगों को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए।

## संकेत शब्द

सुसम्प्रदाय, ग्वालियर घराना, बहलावा, बोलालाप, बोलतान

### भारतीय संगीत में गायन, वादन और नृत्य

भारतीय संगीत में गायन, वादन और नृत्य इन तीनों विधाओं की परम्पराएँ अलग–अलग समय पर विविध रूपों में प्रस्फुटित होती रही है और कालान्तर में यही परम्पराएँ संगीत के विभिन्न घरानों के रूप में विकसित हुई है। इस तरह परम्परा ही पुरातन संगीत को वर्तमान संगीत से जोड़ती है, अलग करती है तथा विभाजक रेखा की भूमिका भी निभाती है। अतः परम्परा को हिन्दुस्तानी संगीत का अभिन्न अंग हम कह सकते हैं। घराने परम्परा के संकेत अथवा प्रतीक है और परम्परागत संगीत के प्रतिनिधि भी है।

गायन के लक्षण बताते हुए पं. शारंगदेव ने संगीत रत्नाकर में इसी अर्थ में ''सुसम्प्रदाय'' शब्द का व्यवहार किया है जिसका अर्थ होता है उत्तम गुरु परम्परा से शिक्षा लिया हुआ।

सम्प्रदाय शब्द का अर्थ किसी वस्तु को विधिवत् व विशेषता पूर्वक देने की प्रक्रिया। आगे चलकर यही सम्प्रदाय शब्द रूढ़ार्थ में गुरु द्वारा शिष्य को विधिवत ज्ञान दिए जाने की परम्परा का द्योतक हो गया।[1]

गुणीजनों के मतों से जब एक गायक अपनी गायकी में कुछ स्वतंत्र प्रतिभा, विशेषता या अन्य गायकों से भिन्नता रखता है और जब वही गायकी अपने शिष्यों को सिखाने लगता है तो शिष्यगण भी उसी प्रकार की गायकी को गाने लगते हैं। कुछ पीढ़ियों तक गायकी की यह परम्परा चलने पर वह एक घराने के नाम से जानी जाने लगती है। इस प्रकार जब एक ही गायकी शिष्य पर शिष्य अनेक पीढ़ियों तक चलती रहे तब वह एक घराना बन जाता है।

सम्प्रदाय, वर्ग, शैली, समुदाय, शाखा, वाणी आदि घरानों की प्राचीनता के ही द्योतक हैं। रूप भेद का परित्याग करके 'घराना' की आत्मा इन सभी में प्रतिबिम्बित होती है। घराना परम्परा की उपयोगिता इसके प्रादुर्भाव से ही रही है। गायन शैली की मौलिकता एवं विशिष्टता के आधार पर ही घराने अस्तित्व में आए। घराना परम्परा भारतीय संगीत में अपना एक अद्वितीय स्थान रखता है। घराना ने क्रियात्मक संगीत को पल्लवित, पुष्पित तथा प्रतिफलित करने में पूर्ण योगदान दिया। इसलिए 'घराना' भारतीय संगीत की अमूल्य निधि व निजी संकल्पना है।[2]

घरानेदार संगीत हमारे संगीत की नीव है। संगीत को विकसित कर उसे उत्कृष्ट बनाने में घरानों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक विद्वान के अनुसार जिस प्रकार ईंट, गारा, लोहा, मिट्टी, लकड़ी

आदि सामग्री एक समान होते हुए भी उनसे निर्मित प्रत्येक भवन की रूप रेखा तथा आकृति अलग होती है ठीक उसी प्रकार ताल, लय, स्वर, संगीतोपयोगी अलंकरण आदि एक समान होते हुए भी उनके संयोजन एवं सूक्ष्म स्वर लगाव से गायकी के भिन्न–भिन्न रूप तैयार हो जाते हैं।[3]

प्रत्येक घराने में राग नियमों का प्राचीन आधार एक होते हुए भी गायकी में किन्हीं विशेषताओं के कारण दूसरे घराने से कुछ अंतर अवश्य रहता है। राग विस्तार के नियमों में आलाप, बोल आलाप, तान, बोलतान, गमक, मींड, खटका, कण, मुर्की आदि अंगों का प्रयोग कर ख्याल गायकी को सरस एवं अभिजात बनाते हैं। इन्हीं नियमों के न्यूनाधिक प्रयोग से विविध घराने बनते हैं।

हमारी प्राचीन संस्कृति को सुरक्षित रखने का श्रेय घरानों को ही जाता है। घरानों ने ही प्राचीन संगीत को सुरक्षित रखा है। हिन्दुस्तानी संगीत को जीवित रखने का श्रेय उन परम्पराओं को ही प्राप्त है जो वर्षों से गुरु–शिष्य की परम्परा के रूप में चली आ रही है। यह ज़रूर है कि प्राचीन गायकी को अब तक जीवित रखने के प्रयत्न में काफी परिवर्तन आ चुके हैं लेकिन आधार के रूप में उस गायकी को जीवित रखा जा सकता है, जिसका श्रेय निश्चित रूप से उन्हें जाता है जिन्होंने अथक परिश्रम से अपने गुरुजनों की सेवा करके संगीत विधा को प्राप्त किया तथा आगे अपने शिष्यों को सिखाकर संगीत के प्राचीन रूप को, कला को, सामान्य सिद्धांतो को एवं पुरानी बंदिशों को जीवित रखने का प्रयत्न किया।

भारत में गुरूकुल प्रणाली वैदिक काल से ही चली आ रही है। इस परम्परा के अंतर्गत ही गेय प्रणाली गायकी जीती जागती रही अर्थात् परम्परा ने गायकी को नष्ट होने से बचाया।

संगीत गुरुमुखी कला है। इसका प्रशिक्षण गुरु शिष्य परम्परा के अंतर्गत होता है। इस परम्परा के प्रयोग में गुरु सदैव केन्द्र बिन्दु होता है। घराने पद्धति प्राचीन गुरुकुल पद्धति का ही एक परिवर्तित रूप है। इस प्रणाली के अन्तर्गत गुरु या उस्ताद के पास रहकर अथवा नियमित रूप से उनके पास जाकर शिष्य उनसे संगीत की शिक्षा ग्रहण करता है। प्राचीन समय से आज तक गुरु और शिष्य परम्परा ऐसे ही चली आ रही है।

संगीत में घराना अपना एक विशेष स्थान रखता है। घराना संयम एवं अनुशासन का ही परिणाम है। घरानों में शिक्षा लेने से पूर्व कायदे और कानूनों का पालन करना अनिवार्य है। क्योंकि घराना कड़े एवं कठोर नियमों तथा अनुशासन की जंजीरों में जकड़ा है। अतः घराने की विद्या का अध्ययन करने से शिष्य में संयम एवं अनुशासन आदि गुण पैदा होता है। एक दृष्टिकोण से घराना हिन्दुस्तानी कलाकार का प्रमाण–पत्र माना जाता है। किसी गायक कलाकार का घराना से संबंधित होना उसकी गायकी को प्रमाणित करता है।[4]

ख्याल गायन शैली के घराने में से ग्वालियर घराना, आगरा घराना, किराना–घराना, पटियाला घराना, दिल्ली घराना, प्रमुख घराने हैं।

संगीत के क्षेत्र में ग्वालियर और वहाँ के राजदरबार का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ग्वालियर की

संगीत कला भारत वर्ष के संगीत में स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। भारतीय संगीत के संरक्षण, संवर्द्धन एवं प्रचार में ग्वालियर का प्रमुख स्थान रहा है। अनेक अलौकिक गायक, अद्वितीय वादक तथा संगीत शास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित इसी ग्वालियर की पुण्य–भूमि से समस्त भारत–भू को अपनी अनुपम कला से मुग्ध कर चुके हैं।[5] संगीत कला को श्रेष्ठता के पद तक पहुँचाने में ग्वालियर घराने के गायकों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इतिहास की दृष्टि से इस घराने की स्थापना के सुत्रों का अन्वेषण करते समय बहुत दूर तक दृष्टिक्षेप करना पड़ता है।[6] संगीत की अनेक शैलियों का संवर्द्धन तथा संरक्षण का श्रेय ग्वालियर घराने को ही जाता है। राजा मानसिंह तोमर राज्यकाल (1486–1516 ई.) ने भारतीय संगीत के इतिहास में ग्वालियर का नाम अमर कर दिया।[7] ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के राज्यकाल में ही ध्रुपद जैसी विशिष्ट संगीत शैली का आविष्कार हुआ। वह स्वयं ही बहुत अच्छे ध्रुपद गायक थे। बाद में सिंधिया राजाओं के शासनकाल में ध्रुपद का स्थान ख्याल ने ले लिया।[8] राजा मानसिंह तोमर को ध्रुपद गायकी का पिता माना जाता है।[9] राजा मानसिंह तोमर ने एक संगीत विद्यालय की स्थापना की थी जिसके अग्रगण्य थे तानसेन। राजा मानसिंह तोमर के बाद कुछ ही वर्षों में तोमर वंश का सौभाग्य सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया। सौभाग्यवश सिंधिया राज्य वंश जो कि महाराष्ट्र से ग्वालियर में बस गया था, उनकी छत्रछाया में संगीत की मशाल और जोरों से जलने लग गई। परन्तु इस समय तक ध्रुपद पीछे छूटता चला गया और ख्याल का उद्‌भव हो चुका था। चाहे ध्रुपद हो या ख्याल ग्वालियर ने दोनों को उच्चतम शिखर पर पहुँचाया।[10]

16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दुस्तान पर मुसलमानों ने आक्रमण किए जिससे संगीत की स्थिति को बहुत क्षति पहुँची। भारत के संगीतज्ञ अलग–अलग रियासतों रजवाड़ों के संरक्षण में रहने लगे।[11] अतः यही से घरानों का निर्माण हुआ और ख्याल शैली का विकास होने लगा। ग्वालियर घराने की उत्पत्ति के संबंध में संगीत विद्वानों के भिन्न–भिन्न मत हैं। एक मत के अनुसार इस घराने के मूल–पुरुष लखनऊ के उस्ताद गुलाम रसूल थे। नत्थन–पीरबक्श इन्हीं के प्रपौत्र थे, जो लखनऊ से ग्वालियर आकर बस गए थे। इस मत के अनुसार नत्थन–पीरबख्श की दो संतान हुई – कादिरबख्श और पीरबख्श। हद्‌दू खाँ और हस्सू खाँ उस्ताद कादिरबख्श के पुत्र थे तथा नत्थू खाँ उस्ताद पीरबख्श के पुत्र थे। एक अन्य मतानुसार नत्थू खाँ भी कादिरबख्श के ही पुत्र थे, जिन्हें पीरबख्श ने गोद लिया था।[12]

उस्ताद हस्सू खाँ के शिष्यों में वासुदेव बुवा जोशी, बाबा दीक्षित और देवजी बुआ परंजपे शामिल हैं। वासुदेव बुवा जोशी के सुयोग्य एवं प्रमाणिक शिष्यों में मसूरकर वामन बुवा चापेकर, पन्ना साहब गुरु जी तथा बालकृष्ण बुवा इचलकरंजीकर। बालकृष्ण बुवा इचलकरंजीकर के तीन शिष्य हुए– विष्णु दिगंबर पलुस्कर, मिराशी बुआ और अनंत मनोहर जोशी। मिराशी बुआ का कोई नामी शिष्य नहीं हुआ। अनंत मनोहर जोशी के शिष्य गजानन राव जोशी के बाद वह परम्परा वहीं खत्म हो गई।

महाराष्ट्र में ख्याल को लोकप्रिय बनाने का श्रेय पंडित बालकृष्ण बुवा इचलकरंजीकर को जाता है। उनके प्रमुख शिष्यों में पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, मिराशी बुआ, अनंत मनोहर जोशी, इंगले बुवा,

दत्तो पंत, वामन बुवा चाफेकर आदि उल्लेखनीय हैं जिन्होंने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का देश में प्रचार किया और उसे उचित मान–सम्मान मिला। पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी की शिष्य परम्परा में खासतौर पर तीन सबसे ज्यादा उल्लेखनीय है– पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. विनायक राव पटवर्धन और पं. नारायण राव व्यास।

स्वर, राग और रस के एकनिष्ठ साधक, संगीत के अनेक ग्रंथों के रचयिता, उच्चकोटि के संगीत शिक्षक और देश विदेश में अपने गायन से श्रोताओं को मुग्ध करने वाले पं. ओंकारनाथ ठाकुर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्हें संगीत मार्तंड (1940), संगीत सम्राट (1943), संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और पदम्श्री (1955) से अलंकृत किया गया था।[13] उनके शिष्यों में पं. बलवंत राय भट्ट, एन. राजम, प्रेमलता शर्मा, राजा भाऊ सनटकके आदि उल्लेखनीय है।

ग्वालियर घराने की विशेषताएँ – ग्वालियर घराना सब घरानों की गंगोत्री माना जाता है। आज सम्पूर्ण देश में अधिकांश घराने इसी घराने से अपना सम्बन्ध जोड़ते हैं। उत्तर भारतीय संगीत को वैभवता के शिखर पर पहुँचाने में जिन घरानों को श्रेय दिया जा सकता है उनमें ग्वालियर घराना अतिप्राचीन तथा असाधारण कहा जाता है। इसी प्रकार ख्याल शैली को लोकप्रिय बनाकर उसके व्यापक प्रचार एवं प्रसार में जिन घरानों की गायकी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है उनमें ग्वालियर घराने की गायकी सर्वाधिक प्रमाणिक, शक्तिशाली, प्रभावशाली, संयमशील एवं सर्वांगपूर्ण मानी जाती है। यहाँ तक जहाँ भी ख्याल गायकी की चर्चा होती है वहाँ ग्वालियर गायकी को ही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। रागों की शुद्धता, गायकी में मींड और गमक का प्रामुख्य तथा गाने में शुद्ध–मुद्रा, शुद्ध–वाणी का पालन ये मुख्य तत्व ग्वालियर गायकी के माने जाते हैं। ग्वालियर घराने की गायकी की अन्य विशेषताओं में ज़ोरदार तथा खुली आवाज़ का गायन, ध्रुपद अंग के ख्याल, सीधी सपाट एवं दानेदार तानें, बोलतानों में लयकारी गमक का सुन्दर और अधिक प्रयोग शामिल है। गायन में सादगी और बोधगम्यता इस घराने की विशेषता रही है। इसके अतिरिक्त गंभीरता और अनुशासन की सात्विकता के लिए भी यह घराना प्रसिद्ध रहा है।[14] ध्रुपद गायन की मौलिकता को लेकर ख्याल गायन ग्वालियर की गायकी का मूलभूत स्वरूप बना। ग्वालियर घराने की विशेषताओं की चर्चा करते हुए पं. लक्ष्मण कृष्णराव पंडित जी के अनुसार खुले गले में शुद्ध आकार में मंजा हुआ गला, बंदिश का कलात्मक प्रस्तुतिकरण तथा उसके अनुसार राग का विस्तार करना इस घराने की विशेषता है।

ग्वालियर घराने की गायकी अष्टांग है। अष्टांग का अर्थ है– आठ अंग। अर्थात् आठ अंगों से युक्त गायकी अष्टांग गायकी कहलाती है। अष्टांग गायकी युक्त राग की बढत अत्यंत कलात्मक, रसपूर्ण और ह्रदयस्पर्शी है। बहलावा, मींड और गमक तथा उसके प्रकार इस गायकी के प्राणतत्व है। ग्वालियर घराने में आठ अंगों का समावेश इस प्रकार है–

1. **आलाप–बहलावा–** ग्वालियर घराने में आलाप का विशेष महत्त्व है। आकार में आलाप करना ग्वालियर घराने की मुख्य विशेषता है। ख्याल गायन आरम्भ करते समय नोम तोम का प्रयोग नहीं करते।

राग गायन में हर एक आलाप आरम्भ व समाप्ति भिन्न स्वरों से तथा भिन्न–भिन्न प्रकार से ली जाती है जिससे पुनर्रावृत्ति न दिख सके।

बहलावा ग्वालियर पंरपरा की गायकी का एक प्रमुख अंग माना जाता है। बहलावा का शाब्दिक अर्थ है बहलाना अर्थात् स्वरों को बहलाकर प्रयोग करना। ख्याल के स्थायी अन्तरे को गाने के पश्चात् दो–दो, चार–चार स्वरसंगतियों का मिलान करते हुए ठेके की लय न बढ़ाते हुए केवल आलापों की ही लय बढ़ाकर स्थायी अंतरे में उन्हें लाते हैं। बहलावे में बंदिश के बोल को लेकर ही भिन्न–भिन्न लय में आलाप करते हैं। आलापों की यह क्रिया ग्वालियर घराने की गायकी में एक वैशिष्ट्य रखती है।[15] बहलावे में स्वर–समुदाय को लय में लेकर गाते हैं परंतु 'स्वर ठहराव' नहीं होता।

2. **बोलालाप–** बंदिश के शब्द और आलाप इन दोनों के स्वरों की संयुक्त रचना बोल आलाप कहलाती है। बोलआलाप में ख्याल के शब्दों का अर्थ प्रकट कर वाक्य रचना स्वरबद्ध की जाती है। इसमें बंदिश में सौंदर्यात्मकता आती है परंतु बंदिश में शब्दों की निरर्थक हत्या से बचना होता है। ख्याल गाते समय बोलालाप का प्रयोग प्रायः स्थायी और अंतरे के बीच में करते हैं।[16]

3. **तान–** वस्तुतः आलाप के समान तान को भी गायन को अलंकृत करने की एक युक्ति मानी गई है। ख्याल गायन शैली में स्वरों के उच्चारण स्थान, स्वर विन्यास, अलंकार तथा लय और गति के आधार पर तानों की विभिन्न प्रकार की रचना की गई है। जैसे– शुद्धतान, कूट तान, मिश्र तान, सरल एवं सपाट तान, फिरत तान, गमक तान, रागांग तान, अलंकारिक तान, एक डाल तान, हलक की तान, जबड़े की तान, पेंचदार तान, फिरकी तान, टप्पे की तान आदि का विशेष रूप से प्रचलन है।

4. **बोलतान–** ग्वालियर परंपरा के गायक उपर्युक्त सभी महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखते हुए बोलतानों का प्रयोग अत्यंत कुशलता पूर्वक करते हैं। ग्वालियर घराने की बोलतानें जोरदार एवं वैचित्र्यपूर्ण हैं। ग्वालियर परम्परा के गायक प्रायः दुगुन, तिगुन, चौगुन, छःगुन आदि लयों में कुछ उपजें लेते हैं जिनको बोलतान कहा जाता है। इस क्रिया में शब्दों को विभिन्न स्वर समुदायों में बाँधकर भिन्न–भिन्न लयकारियों में गाते हैं एवं सम पर इस प्रकार से आते हैं कि गायन में बहुत ही वैचित्र्यता निर्माण हो जाती है। एक ही आवर्तन में बंदिश के शब्द क्रमानुसार एक के बाद एक लेकर आखिर में मुखड़े को पकड़ना भी ग्वालियर घराने की बोलतान का एक विशिष्ट अंग है। गमकयुक्त विशेष बोलतान के लिए पदम्भूषण कृष्णराव पंडित प्रसिद्ध हुए।[17]

5. **गमक–** आलाप गायन में गमक का कलात्मक प्रयोग किया जाता है। ग्वालियर प्रांरभ से ही ध्रुपद शैली का प्रमुख स्थान रहा है। इसलिए यहाँ ख्याल गायन शैली की परम्परा में ध्रुपद के आकर्षक तत्वों एवं ध्रुपद अंग के ख्यालों को सहजता से अपनाया है जिसमें गमक का विशेष रूप से प्रयोग किया गया है। इस परम्परा में तानों में गमक का प्रयोग विशेष रूप से देखा जाता है। इस घराने की गायकी की कुछ विशिष्ट गमक निम्नानुसार हैं–

सारेसासा, रेरेसासा, नि़सारेरेसानि़सा, रेरेसानि़सा, सारेरेसानि़सा, धधपमप आदि।

6. **लयकारी–** ध्रुपद गायन की मौलिकता (शब्दों का स्पष्ट उच्चारण राग की शुद्धता, बोलतानों में लयकारी, मींड और गमक का प्रयोग) को लेकर ख्याल गायन ग्वालियर घराने की गायकी का मूलभूत स्वरूप बना। इसमें लयकारी का विशेष महत्त्व है। ख्याल गाते समय जब हम बहलावा, बोलबाँट करते हैं तो दो–दो, चार–चार, स्वर संगतियों का मिलान करते हुए ठेके की लय न बढ़कर आलाप की लय बढ़ाते हैं और भिन्न लय में आलाप करते हैं। ख्याल गायन में गायक बोलतानों को भिन्न–भिन्न लय में गाते हैं जिसे बोलतानों में लयकारी कहा जाता है।

7. **मींड और सूत–** ग्वालियर परम्परा में आलाप गायन में मींड का कलात्मकता प्रयोग किया जाता है। इसे इस शैली का प्राण समझा जाता है। मींड अन्तस्थल को स्पर्श करती है। मींड का प्रयोग ख्याल में ध्रुपद से ही आया है। एक स्वर से दूसरे स्वर तक घसीटते हुए जाने को मींड कहते हैं। सूत और मींड के प्रयोग का तरीका बिल्कुल समान है। सूत और मींड में केवल इतना ही अंतर है कि मींड का प्रयोग गाने में या सितार इत्यादि मिज़राब वाले साज़ों में होता है और सूत का प्रयोग गज़ से बजने वाले साज़ों जैसे– सारंगी, दिलरूबा, वायलिन इत्यादि में होता है। तरीका वही है जो मींड का है।

8(i) **खटका–** ग्वालियर घराने में खटका का प्रयोग ख्याल गायन शैली के साथ–साथ टप्पा गायन में भी सहजता से होता है। एक समय में चार स्वर निकलते हैं जैसे– रेसानिसा, धपमप लिखते समय (सा) (प) अर्थात षड्ज या पंचम को थोड़ा जोर देकर गाने से गले से खटका निकल जाता है।

(ii) **मुर्की–** ग्वालियर घराने में ख्याल गायन शैली में राग का विस्तार करते समय आलाप या बोल–आलाप में कभी कभी मुर्की का प्रयोग किया जाता है। मुरक या मुर्की का शाब्दिक अर्थ मुड़ना या घूम जाना या चलते–चलते घूम जाना है। गायन में यह क्रिया मुर्की के नाम से जानी जाती है। कम स्वरों में ही मुर्की बन जाती है। मुर्की का स्वरूप गमपगम, रेगमपगम, अर्थात् स्वरों का खूबसूरत घुमाव की मुर्की कहलाता है। कम स्वरों का इस खूबसूरत घुमाव के प्रयोग से गायकी में विविधता आती है।

(iii) **ज़मज़मा–** यह उर्दू भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है स्वर– योजना। संगीत में व्यवहारिक अर्थ में दो स्वरों के पर्यायक्रम में एक से अधिक बार के प्रयोग विशेष को ज़मज़मा कहते हैं। जैसे– सामगम, पपपप, ममम, गगगग । यह टप्पा गायकी में ज़मज़मा का प्रयोग होता है परंतु उसकी क्रिया तेज़ होती है। तेज़ गति होने से सूक्ष्म स्वर परोक्ष में चला जाता है अर्थात् सुनाई नहीं देता। इसके प्रयोग से गायकी में विविधता आती है।

इन आठ अंगों का समावेश ग्वालियर घराने की ख्याल गायन शैली में विद्यमान है। ख्याल गायकी की आत्मा इन्हीं आठ अंगों में समाई है। यह अष्टांग गायकी संगीत की आत्मा है। संगीत के गहन अध्ययन, भावाभिव्यक्ति, चिंतन मनन का जड़ इन्हीं अष्ट–अंगों में छिपा है। इस अष्टांग गायकी का गोमुख ग्वालियर रहा है। जिसकी धारा अन्य घरानों में भी जाकर मिली। बीजरूप से समस्त घरानों में अष्टांग गायकी की विचारधारा विद्यमान है।

अष्टांग गायकी ग्वालियर घराने की क्लिष्ट गायकी मानी जाती है। इसलिए जो भी कलाकार इस घराने से संबंध रखता है उसे इन आठ अंगों का पूर्ण अभ्यास करना चाहिए तथा राग का विस्तार इन आठ अंगों को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए।

## संदर्भ

1. शब्द कल्पद्रुम, कोष भाग 5, पृ॰ 26
2. गोस्वामी, डॉ. हरिकृष्ण, भारतीय संगीत की परम्पराः वंशानुक्रम एवं वातावरण, पृ॰ 23
3. माल्लनकर, डॉ. न.र., संगीत घराना अंग जनवरी–फरवरी, 1982, संगीतांजलि धारणी, पृ॰ 31
4. गोस्वामी, डॉ. हरिकृष्ण, भारतीय संगीत का परम्परा : वंशानुक्रम एवं वातावरण, पृ॰ 23
5. बांगरे, डॉ. अरूण, ग्वालियर की संगीत परम्परा, पृ॰ 1
6. बांगरे, डॉ. अरूण, ग्वालियर घराना, पृ॰ 15
7. बांगरे, डॉ. अरूण, ग्वालियर घराना, पृ॰ 12
8. बांगरे, डॉ. अरूण, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में घराना परम्परा, पृ॰ 7
9. पंडित, पं. कृष्णराव लक्ष्मण, भारतीय संगीत के अमर साधक, पृ॰ 3
10. पंडित, पं. कृष्णराव लक्ष्मण, भारतीय संगीत के अमर साधक, पृ॰ 2
11. मिश्र, शम्भुनाथ, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परम्परा, पृ॰ 2
12. मिश्र, शम्भुनाथ, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परम्परा, पृ॰ 7
13. मिश्र, शम्भुनाथ, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परम्परा, पृ॰ 14, 22
14. मिश्र, शम्भुनाथ, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परम्परा, पृ॰ 7
15. बांगरे, अरूण, ग्वालियर घराना, पृ॰ 36
16. बांगरे, अरूण, ग्वालियर घराना, पृ॰ 35
17. पंडित, पं. शंकर – पंडित तुषार, भारतीय संगीत के महान संगीतकार, पृ॰ 45